दुखदायी होता है दुष्टजनों का संग

वेदों में कहा गया है कि ऐसे लोगों को धर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास करना चाहिए जो किसी तरह के पाप में लिप्त हों। लेकिन यह निर्देश देते हुए वेदों में यह भी स्पष्ट कहा गया है कि दुष्ट लोगों से ऐसा संबंध भी नहीं रखना चाहिए कि जिससे आपकी पवित्रता और सज्जनता पर आमंच आती हो।

इस प्रसंग में हितोपदेश की एक कथा बहुत प्रसिद्ध है। एक व्यापारी उज्जयिनी तीर्थ की यात्रा पर जा रहा था। वह भगवान महा कालेश्वर के दर्शन करना चाहता था। यात्रा लंबी थी। चलते-चलते मार्ग में एक विशाल वट वृक्ष के नीचे विश्राम कर लिया जाए।

उस दौरान गर्मी का मौसम अपने चरम पर था। यात्रा के कारण थका-मांदा यात्री जैसे ही पेड़ के नीचे लेटा और उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद वृक्ष के पत्तों के बीच से गर्म धूप उसके ऊपर पड़ने लगी। उस वृक्ष पर अनेक पक्षी रहते थे। एक हंस भी वहीं निवास करता था। वह अत्यंत साधु और सज्जन स्वभाव का था। उसे लगा कि धूप पड़ने से यात्री की नींद टूट सकती है। यात्री को धूप से बचाने के लिए वह वृक्ष की एक शाखा पर अपने पंख फैलाकर बैठ गया। इससे यात्री के ऊपर छाया हो गई। जब कौए ने देखा कि हंस सज्जनता का कार्य कर रहा है तो उसेने विघ्न डालने की योजना बनाई वह हंस के पास आकर बैठ गया। हंस ने आदर के साथ कौए को अपने पास बैठा लिया। लेकिन कौवा तो हंस को कष्ट देना चाहता था। अत: उसने सोचा कि यदि मैं यात्री के मुख पर बीट कर देता हूं तो वह नाराज हो जाएगा और सोचेगा कि हंस ने ही बीट की है। वह हंस को बाण चलाकर मार देगा और मैं उससे पहले ही उड़ जाउंगा। अपनी इस योजना के अनुसार कौए ने यात्री के मुख पर बीट कर दी। यात्री की आंख खुल गई। अपने ऊपर पड़ी बीट को देखकर उसने अनुमान लगाया कि यह काम ऊपर बैठे हंस का ही है। कौवा पहले ही उड़ चुका था। क्रोधित यात्री ने बाण चलाकर हंस की हत्या कर दी। यह देखकर दूर बैठा कौवा मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। कौवा स्वयं तो अच्छा आचरण करके सम्मान पाने की इच्छा नहीं रखता था लेकिन वह हंस से इस कारण ईर्ष्या करता था कि हंस सबके लिए आदर का पात्र क्यों है? यजुर्वेद में ॠषि प्रार्थना करते हैं कि हे संसार के उत्पादक देव। आप सारे दुर्गुणों और दुर्जनों को हम से दूर रखिए तथा हमारे लिए जो कल्याणकारी गुण हों, उन्हें हमें दीजिए। आचार्य चाणक्य ने कहा है कि लोगों को स्वयं तो अच्छा आचरण करना चाहिए पर साथ ही कपटी लोगों से सावधान रहते हुए उनकी कुटिल चालों को विफल करना चाहिए। अथर्व वेद में कौए जैसी प्रवृत्ति वाले लोगों को आस्तीन का सांप कहा गया है। ॠषि कहते हैं कि यहां जो पास में आस्तीन के सांप उपस्थित हैं, वे सारहीन हो जाएं। ॠषि ने बिच्छू को हथोड़े से मारने और पास आए सर्प को लाठी से मारने की बात भी कही है। वेद के ॠषि आह्वान करते हैं कि समाज को सुरक्षा देने के लिए दुर्जनों का दमन करो और उनका त्याग करो। इसलिए साधक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! शत्रु जनों का अनिष्ट चितंन और कपट व्यवहार हमारे पास तक न आए। हे ईश्वर! हमें अच्छी प्रेरणाएं देकर हमारी रक्षा करें और हम दुर्जनों की कुटिल नीतियों से सदैव सावधान रहें। भारतीय चिंतन में उन लागों को ही राक्षस, असुर या दैत्य कहा गया है जो समाज में तरह-तरह से अशांति फैलाते हैं। असल में इस तरह की दानवी सोच वाले लोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। ऐसे लोग धन-संपत्ति आदि के जरिए सिर्फ अपना ही उत्थान करना चाहते हैं, भले ही इस कारण दूसरे लोगों और पूरे समाज का कोई अहित क्यों न हो रहा हो। वेद कहते हैं कि विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाओ। यह श्रेष्ठता तब ही आएगी जब कुटिल चालों से मानवता की रक्षा की जायेगी।

- नवभारत टाईम्स